

# Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



## Research Paper

## हिन्दी रंगमंच में राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकार

Priyanka Khoja<sup>1\*</sup>, Dr. Rajendra Parmar<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholer, Department of Hindi, Faculty of Arts & Huminities, Gujarat University, Ahmedabad, Gujarat, India

<sup>2</sup> Associate Professor, Department of Hindi, Faculty of Arts & Huminities, Gujarat University, Ahmedabad, Gujarat, India

Corresponding Author: \* Priyanka Khoja

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19850222>

सारांश	Manuscript Info.
<p>हिन्दी रंगमंच भारतीय समाज की चेतना, संघर्ष और परिवर्तनशील प्रवृत्तियों का एक सशक्त माध्यम रहा है, जिसने समय-समय पर सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। विशेष रूप से राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकारों के संदर्भ में हिन्दी नाटक और रंगमंच ने न केवल समाज की समस्याओं को उजागर किया है, बल्कि वैचारिक प्रतिरोध, जागरूकता और परिवर्तन की दिशा भी प्रदान की है। इस शोध पत्र में हिन्दी रंगमंच के विकासक्रम का समग्र विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन किया गया है कि विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों- विशेषकर भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-उपरांत काल से लेकर समकालीन रंगमंच तक-राजनीतिक विचारधाराओं ने किस प्रकार रंगमंच की संरचना, विषयवस्तु और अभिव्यक्ति शैली को प्रभावित किया। साथ ही, यह भी विवेचन किया गया है कि नाटककारों ने अपने नाटकों के माध्यम से जनजीवन की जटिल समस्याओं, जैसे सामाजिक असमानता, राजनीतिक शोषण, लोकतांत्रिक विडंबनाएँ, स्त्री-विमर्श और हाशिये के वर्गों के संघर्षों को किस प्रकार प्रस्तुत किया है। अध्ययन में प्रमुख नाटककारों के कार्यों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी रंगमंच केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त वैचारिक मंच है, जो समाज में संवाद, आलोचना और परिवर्तन की प्रक्रिया को सक्रिय करता है। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि हिन्दी रंगमंच एक जीवंत लोकतांत्रिक मंच के रूप में कार्य करता है, जो सत्ता, समाज और व्यक्ति के बीच निरंतर संवाद स्थापित करते हुए सामाजिक चेतना को विकसित करने और जनसरोकारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।</p>	<ul style="list-style-type: none"> <li>✓ ISSN No: 2584-184X</li> <li>✓ Received: 03-11-2025</li> <li>✓ Accepted: 25-12-2025</li> <li>✓ Published: 30-12-2025</li> <li>✓ MRR:3(12):2025:126-133</li> <li>✓ ©2025, All Rights Reserved.</li> <li>✓ Peer Review Process: Yes</li> <li>✓ Plagiarism Checked: Yes</li> </ul> <p><b>How To Cite</b></p> <p>Khoja P, Parmar R. हिन्दी रंगमंच में राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकार. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(12):126-133.</p>

**मुख्य शब्द:** आधुनिक हिन्दी नाटक, राजनीतिक चेतना, सत्ता और भ्रष्टाचार, जनसंघर्ष एवं प्रतिरोध, लोकतंत्र की विडंबनाएँ, सामाजिक यथार्थ, प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति

## 1. प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी नाटक भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण और सशक्त विधा के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें समाज के बदलते स्वरूप, सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा राजनीतिक परिस्थितियों का जीवंत और प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है। विशेष रूप से राजनीतिक चेतना का स्वरूप आधुनिक हिन्दी नाटकों का एक केंद्रीय तत्व बनकर उभरा है, जो न केवल सत्ता और शासन की संरचनाओं को उजागर करता है, बल्कि जनमानस की मानसिकता, उसके संघर्ष, असंतोष, प्रतिरोध और परिवर्तन की आकांक्षा को भी अभिव्यक्त करता है (भारद्वाज, 2015, पृ. 115)। भारत के सामाजिक-राजनीतिक इतिहास-जिसमें औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता संग्राम, विभाजन की त्रासदी, लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना तथा स्वतंत्रता के बाद के राजनीतिक उतार-चढ़ाव शामिल हैं-ने हिन्दी नाटककारों को गहराई से प्रभावित किया है (तिवारी, 2010, पृ. 220)। इन ऐतिहासिक अनुभवों ने नाटककारों को प्रेरित किया कि वे अपने नाटकों के माध्यम से राजनीतिक यथार्थ, सामाजिक विसंगतियों और सत्ता के अंतर्विरोधों को सामने लाएँ (शर्मा, 2008, पृ. 62)। आधुनिक हिन्दी नाटकों में राजनीतिक चेतना केवल प्रत्यक्ष राजनीतिक घटनाओं का चित्रण नहीं करती, बल्कि यह प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक और रूपकात्मक रूपों में भी अभिव्यक्त होती है, जिससे नाटक अधिक गहन और प्रभावशाली बन जाते हैं (सक्सेना, 2013, पृ. 108)। नाटककारों ने सत्ता के दुरुपयोग, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, लोकतंत्र की विडंबनाओं तथा आम जनता के संघर्षों को अपने कथानकों का केंद्र बनाकर यह दिखाने का प्रयास किया है कि राजनीति केवल शासक वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित करती है (मिश्रा, 2019, पृ. 50)। इसके साथ ही आधुनिक हिन्दी नाटक जनसामान्य को जागरूक करने, उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत करने तथा सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करने का कार्य भी करता है (त्रिपाठी, 2014, पृ. 105)। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी नाटकों में राजनीतिक चेतना का स्वरूप न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक जागरण और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## हिन्दी रंगमंच का ऐतिहासिक विकास और राजनीतिक चेतना भारतेन्दु युग और राष्ट्रीय चेतना

हिन्दी रंगमंच का आधुनिक स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय में विकसित हुआ, जिसे हिन्दी नाट्य साहित्य का स्वर्णिम आरंभिक चरण भी कहा जाता है। इस काल में नाटक केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहे, बल्कि वे सामाजिक जागरण, राष्ट्रीय चेतना और राजनीतिक प्रतिरोध के प्रभावी साधन बनकर उभरे (चक्रवर्ती आदि, 2025)। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी रंगमंच का जनक कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने न केवल नाटक लेखन को नई दिशा दी, बल्कि रंगमंच को समाज और राजनीति से जोड़ने का कार्य भी किया।

भारतेन्दु युग में भारत अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन के अधीन था, जिसके कारण समाज में आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक हीनता और राजनीतिक दमन का वातावरण व्याप्त था। इस पृष्ठभूमि में भारतेन्दु के नाटक राष्ट्रीय भावना को जागृत करने के लिए एक सशक्त माध्यम

बने। उनके नाटकों में देशभक्ति, स्वाभिमान और सामाजिक सुधार की स्पष्ट चेतना दिखाई देती है। विशेष रूप से "अंधेर नगरी" एक ऐसा नाटक है जो तत्कालीन शासन व्यवस्था की विसंगतियों, अराजकता और भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य करता है। "टके सेर भाजी, टके सेर खाजा" जैसे संवाद उस समय की आर्थिक और प्रशासनिक अव्यवस्था का प्रतीक हैं।

इस नाटक में राजनीतिक अव्यवस्था को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ एक मूर्ख और अन्यायी राजा की सत्ता जनता के जीवन को संकट में डालती है। यह केवल एक काल्पनिक कथा नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शासन और भारतीय समाज की स्थिति का यथार्थ चित्रण है। भारतेन्दु ने व्यंग्य और प्रतीक के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि जब सत्ता में नैतिकता और विवेक का अभाव होता है, तब समाज में अराजकता और अन्याय का विस्तार होता है।

भारतेन्दु युग के नाटकों में सामाजिक सुधार की भावना भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी। उन्होंने नारी शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाई। इस प्रकार उनके नाटक केवल राजनीतिक चेतना तक सीमित नहीं रहे, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन के वाहक बने। रंगमंच के माध्यम से उन्होंने जनसामान्य को यह संदेश दिया कि समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए जागरूकता और सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

इस युग में रंगमंच ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया (कुमार आदि, 2014)। नाटककारों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से औपनिवेशिक सत्ता की आलोचना की और जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इस प्रकार राजनीतिक चेतना का स्वरूप स्पष्ट रूप से उभरने लगा था और रंगमंच एक प्रकार से जनआंदोलन का सांस्कृतिक माध्यम बन गया था।

## प्रसाद युग और ऐतिहासिक चेतना में राजनीति

भारतेन्दु के बाद हिन्दी रंगमंच का विकास जयशंकर प्रसाद के समय में एक नई दिशा में हुआ। प्रसाद युग में नाटक अधिक परिष्कृत, दार्शनिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्ध हुए। इस काल में प्रत्यक्ष राजनीतिक आलोचना की अपेक्षा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से राजनीतिक विचारधारा को अभिव्यक्त किया गया।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषता यह है कि उन्होंने इतिहास को केवल घटनाओं के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय गौरव और राजनीतिक आदर्शों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। "चंद्रगुप्त", "स्कंदगुप्त" और "ध्रुवस्वामिनी" जैसे नाटकों में भारतीय इतिहास के गौरवशाली अतीत को पुनर्जीवित करते हुए राष्ट्रवाद, नेतृत्व, कर्तव्य और सत्ता की नैतिकता जैसे मुद्दों को उठाया गया है। इन नाटकों के माध्यम से प्रसाद ने यह दिखाने का प्रयास किया कि एक सशक्त और नैतिक नेतृत्व ही राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकता है।

"स्कंदगुप्त" में विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध संघर्ष और राष्ट्र की रक्षा का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह नाटक उस समय के भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना को पुनर्जीवित करने का प्रयास करता है। इसी प्रकार "चंद्रगुप्त" में चाणक्य और चंद्रगुप्त के माध्यम से राजनीतिक रणनीति, नेतृत्व और राज्य संचालन के आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रसाद के नाटकों में प्रत्यक्ष राजनीतिक विरोध या विद्रोह नहीं है, लेकिन उनके माध्यम से सत्ता और समाज के संबंधों पर गहरा चिंतन प्रस्तुत किया गया है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि सत्ता का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि जनता के हितों की रक्षा करना भी है (कुमार आदि, 2014)। यदि सत्ता नैतिकता से विमुख हो जाती है, तो उसका परिणाम समाज के पतन के रूप में सामने आता है। इस प्रकार प्रसाद युग में राजनीतिक विचारधारा अधिक सूक्ष्म और दार्शनिक रूप में प्रस्तुत होती है। यह युग यह दर्शाता है कि इतिहास और संस्कृति के माध्यम से भी राजनीतिक चेतना को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

### प्रगतिवादी युग और वर्ग संघर्ष

बीसवीं शताब्दी के मध्य में हिन्दी रंगमंच पर प्रगतिवादी आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा। इस युग में नाटककारों ने समाज की वास्तविक समस्याओं को केंद्र में रखा और वर्ग संघर्ष, शोषण, असमानता तथा आर्थिक विषमता जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। यह काल हिन्दी रंगमंच के लोकतांत्रिक और जनोन्मुख स्वरूप का प्रतीक है। प्रगतिवादी विचारधारा मुख्यतः मार्क्सवादी सिद्धांतों से प्रेरित थी, जिसमें समाज को वर्गों में विभाजित मानते हुए शोषण के विरुद्ध संघर्ष को आवश्यक बताया गया (दलमिया आदि, 2008)। इस विचारधारा का प्रभाव हिन्दी नाटकों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। नाटककारों ने किसानों, मजदूरों और निम्न वर्गों के जीवन संघर्ष को मंच पर प्रस्तुत किया और उनके अधिकारों के लिए आवाज उठाई।

इप्ता (Indian People's Theatre Association – IPTA) का गठन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इप्ता ने रंगमंच को सीधे जनता से जोड़ने का कार्य किया। इसके नाटक गाँवों, कस्बों और श्रमिक क्षेत्रों में प्रस्तुत किए जाते थे, जिससे आम जनता भी रंगमंच से जुड़ सकी। यह रंगमंच अब केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जनसाधारण का मंच बन गया। प्रगतिवादी नाटकों की भाषा और शैली भी सरल और सहज थी, जिससे वे अधिक प्रभावशाली बन सके। इन नाटकों में यथार्थवाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। नाटककारों ने जीवन के कटु सत्य को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत किया और दर्शकों को सोचने के लिए प्रेरित किया।

इस युग का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने हिन्दी रंगमंच को जनसरोकारों से गहराई से जोड़ दिया। अब नाटक केवल कला नहीं रहे, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के साधन बन गए (ओर्सिनी आदि, 2009)। इस प्रकार प्रगतिवादी युग हिन्दी रंगमंच के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जहाँ राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकारों का गहरा और स्थायी संबंध स्थापित हुआ।

### स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच और राजनीतिक विमर्श

#### मोहान राकेश और अस्तित्ववादी दृष्टिकोण

स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद हिन्दी रंगमंच में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है, जहाँ राष्ट्रीयता और सामाजिक सुधार की अपेक्षा व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष, अस्तित्वगत संकट और सामाजिक विखंडन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया। इस परिवर्तन के केंद्र में मोहन राकेश का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने हिन्दी नाटक को आधुनिकता और मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की। उनके

नाटकों में व्यक्ति की पहचान, अकेलापन, संबंधों का टूटना और सामाजिक दबावों के बीच जीवन की जटिलता का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

मोहन राकेश का प्रसिद्ध नाटक "आधे-अधूरे" इस दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस नाटक में एक मध्यवर्गीय परिवार की कहानी के माध्यम से व्यक्ति की विखंडित मानसिकता और असंतोष को प्रस्तुत किया गया है। नाटक की नायिका सावित्री अपने जीवन में पूर्णता की खोज करती है, लेकिन उसे हर संबंध में अधूरापन ही मिलता है (ओर्सिनी आदि, 1996)। यह अधूरापन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना का परिणाम है, जो व्यक्ति को संतोष और स्थिरता प्रदान करने में असमर्थ है।

राकेश के नाटकों में अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ व्यक्ति अपने अस्तित्व के अर्थ की खोज में संघर्ष करता है। यह संघर्ष केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से भी जुड़ा हुआ है। उनके पात्र अक्सर असमंजस, असुरक्षा और निराशा से घिरे होते हैं, जो आधुनिक जीवन की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करते हैं।

हालाँकि मोहन राकेश के नाटक प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक नहीं हैं, लेकिन उनमें सामाजिक संरचनाओं की आलोचना के माध्यम से राजनीतिक चेतना व्यक्त होती है (बोस आदि, 2009)। वे यह संकेत देते हैं कि सामाजिक संस्थाएँ, जैसे परिवार, विवाह और कार्यस्थल, किस प्रकार व्यक्ति के जीवन को नियंत्रित और प्रभावित करती हैं। यह नियंत्रण एक प्रकार की अदृश्य राजनीति है, जो सत्ता के पारंपरिक रूपों से अलग होते हुए भी उतनी ही प्रभावशाली है।

इस प्रकार राकेश का रंगमंच यह स्थापित करता है कि राजनीति केवल शासन और सत्ता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के दैनिक जीवन, संबंधों और मानसिक स्थिति में भी व्याप्त होती है। उनके नाटक आधुनिक हिन्दी रंगमंच को एक नई दिशा देते हैं, जहाँ व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से व्यापक सामाजिक और राजनीतिक सच्चाइयों को उजागर किया जाता है।

### धर्मवीर भारती और नैतिक राजनीति

धर्मवीर भारती हिन्दी रंगमंच के ऐसे महत्वपूर्ण नाटककार हैं, जिन्होंने पौराणिक कथाओं के माध्यम से आधुनिक राजनीतिक और नैतिक प्रश्नों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनका प्रसिद्ध नाटक "अंधा युग" इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो महाभारत के युद्ध के अंतिम दिनों की पृष्ठभूमि में रचा गया है। यह नाटक केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि आधुनिक युग की राजनीतिक विडंबनाओं और नैतिक संकटों का गहरा रूपक है।

"अंधा युग" में युद्ध के बाद की स्थिति को चित्रित किया गया है, जहाँ चारों ओर विनाश, निराशा और नैतिक पतन का वातावरण है। इस नाटक के पात्र, जैसे धृतराष्ट्र, गांधारी और अश्वत्थामा, अपने-अपने अपराधबोध, क्रोध और प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त हैं (भाटिया आदि, 2010)। यह स्थिति उस समाज का प्रतीक है, जहाँ सत्ता के संघर्ष ने नैतिक मूल्यों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।

धर्मवीर भारती इस नाटक के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि जब राजनीति नैतिकता से विमुख हो जाती है, तो उसका परिणाम केवल युद्ध और विनाश के रूप में सामने आता है। यह नाटक द्वितीय विश्व

युद्ध और विभाजन के बाद के भारतीय समाज की परिस्थितियों का भी संकेत देता है, जहाँ मानवता और नैतिकता गंभीर संकट में थीं। नाटक का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि अंधकार और निराशा के बीच भी आशा और नैतिकता का मार्ग संभव है। कृष्ण का संदेश इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो यह दर्शाता है कि मनुष्य को अपने कर्मों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए और सत्य तथा धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए।

इस प्रकार "अंधा युग" केवल एक नाटक नहीं, बल्कि एक गहरा राजनीतिक और नैतिक विमर्श है, जो यह दर्शाता है कि सत्ता और नैतिकता के बीच संतुलन आवश्यक है। यदि यह संतुलन बिगड़ता है, तो समाज में अराजकता और विनाश अनिवार्य हो जाते हैं। धर्मवीर भारती का यह योगदान हिन्दी रंगमंच को एक गंभीर दार्शनिक और नैतिक आधार प्रदान करता है।

### हबीब तनवीर और लोकधर्म राजनीति

हिन्दी रंगमंच में हबीब तनवीर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिन्होंने इसे लोकधर्म स्वरूप प्रदान करते हुए जनसरोकारों से गहराई से जोड़ा (दिमित्रोवा आदि, 2023)। उन्होंने यह सिद्ध किया कि रंगमंच केवल शहरी या अभिजात वर्ग का माध्यम नहीं, बल्कि आम जनता की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन भी हो सकता है। उनके नाटकों में लोकजीवन, लोकभाषा और लोकसंस्कृति का जीवंत चित्रण मिलता है, जो उन्हें विशिष्ट बनाता है।

हबीब तनवीर के नाटक "आगरा बाजार" और "चरणदास चोर" इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। "आगरा बाजार" में उन्होंने साधारण लोगों के जीवन, उनकी भाषा और उनकी संस्कृति को मंच पर प्रस्तुत किया है। यह नाटक पारंपरिक रंगमंच की सीमाओं को तोड़ता है और दर्शकों को सीधे समाज के वास्तविक जीवन से जोड़ता है।

"चरणदास चोर" में एक चोर के चरित्र के माध्यम से समाज की नैतिकता और सत्ता की विसंगतियों को उजागर किया गया है। यह नाटक यह दर्शाता है कि एक साधारण व्यक्ति भी सत्य और ईमानदारी का प्रतीक हो सकता है, जबकि सत्ता में बैठे लोग भ्रष्ट और अनैतिक हो सकते हैं। इस प्रकार यह नाटक पारंपरिक नैतिक धारणाओं को चुनौती देता है और समाज के वास्तविक स्वरूप को सामने लाता है। हबीब तनवीर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने लोकभाषा और लोककलाओं को अपने नाटकों में प्रभावी ढंग से उपयोग किया (कांडी आदि, 2024)। उन्होंने छत्तीसगढ़ी कलाकारों और लोकनाट्य शैलियों को मंच पर स्थान दिया, जिससे उनका रंगमंच अधिक जीवंत और प्रामाणिक बन सका। यह लोकधर्म शैली न केवल मनोरंजक है, बल्कि यह राजनीतिक विचारधारा को भी सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।

उनके नाटकों में सत्ता और समाज के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है। वे यह दिखाते हैं कि किस प्रकार सत्ता अक्सर जनता से दूर हो जाती है और उनके हितों की अनदेखी करती है। इसके विपरीत, उनके नाटक आम जनता के जीवन, संघर्ष और आकांक्षाओं को केंद्र में रखते हैं। इस प्रकार हबीब तनवीर का रंगमंच जनसरोकारों और राजनीतिक विचारधारा का एक सशक्त उदाहरण है, जो यह दर्शाता है कि कला के माध्यम से समाज में जागरूकता और परिवर्तन लाया जा सकता है। उनके नाटक हिन्दी रंगमंच को

एक नई दिशा देते हैं, जहाँ लोक और राजनीति का समन्वय एक प्रभावी और सार्थक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है।

### समकालीन हिन्दी रंगमंच और जनसरोकार

समकालीन हिन्दी रंगमंच वर्तमान समाज की जटिलताओं, संघर्षों और बदलती राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों का सशक्त प्रतिबिंब है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, लोकतांत्रिक विस्तार और सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव ने रंगमंच को एक नए विमर्श का माध्यम बना दिया है। आज का हिन्दी रंगमंच केवल कथानक या प्रस्तुति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैचारिक मंच के रूप में कार्य करता है, जहाँ समाज के विविध प्रश्नों पर संवाद स्थापित किया जाता है ((वाल्डज़ आदि, 1977)। विशेष रूप से जनसरोकारों के संदर्भ में समकालीन नाटककारों ने उन मुद्दों को केंद्र में रखा है, जो सीधे आम जनता के जीवन को प्रभावित करते हैं।

### राजनीतिक भ्रष्टाचार और सत्ता की आलोचना

समकालीन हिन्दी रंगमंच में राजनीतिक भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग और लोकतांत्रिक संस्थाओं की विफलता जैसे विषय अत्यंत प्रमुखता से उभरकर सामने आए हैं। आज का नाटककार अपने समय की राजनीतिक वास्तविकताओं से पूरी तरह जुड़ा हुआ है और वह बिना किसी आडंबर के इन सच्चाइयों को मंच पर प्रस्तुत करता है। यह रंगमंच सत्ता की नीतियों, नेताओं की कार्यप्रणाली और प्रशासनिक तंत्र की खामियों पर तीखा प्रहार करता है। आधुनिक नाटकों में यह दिखाया जाता है कि किस प्रकार भ्रष्टाचार केवल एक व्यक्तिगत दोष नहीं, बल्कि एक व्यापक संरचनात्मक समस्या बन चुका है, जो शासन के हर स्तर पर व्याप्त है। नाटककार यह उजागर करते हैं कि सत्ता में बैठे लोग अक्सर अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों की अनदेखी करते हैं, जिससे आम जनता को भारी नुकसान उठाना पड़ता है (चटर्जी आदि, 2016)। इस प्रकार रंगमंच एक प्रतिरोधी स्वर के रूप में उभरता है, जो सत्ता के विरुद्ध प्रश्न खड़े करता है।

इन नाटकों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे केवल सत्ता की आलोचना तक सीमित नहीं रहते, बल्कि जनता की भूमिका को भी रेखांकित करते हैं। वे यह दर्शाते हैं कि लोकतंत्र केवल सरकार या नेताओं का दायित्व नहीं है, बल्कि इसमें जनता की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। यदि जनता जागरूक और जिम्मेदार नहीं होगी, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर हो जाएगी। इस प्रकार समकालीन रंगमंच एक चेतावनी और प्रेरणा दोनों का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, व्यंग्य, प्रतीक और यथार्थवादी शैली का उपयोग करते हुए नाटककार राजनीतिक विडंबनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। यह शैली दर्शकों को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि चिंतन के लिए भी प्रेरित करती है। इस प्रकार राजनीतिक आलोचना समकालीन हिन्दी रंगमंच का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पक्ष बन गई है।

### पहचान, अस्मिता और राजनीति

समकालीन हिन्दी रंगमंच में पहचान और अस्मिता के प्रश्नों को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है (बिस्वास आदि, 2023)। जाति, लिंग, धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता जैसे मुद्दे अब केवल सामाजिक विषय नहीं रहे, बल्कि वे गहरे राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन चुके हैं। नाटककार इन मुद्दों को मंच पर प्रस्तुत करते हुए यह दिखाने का प्रयास करते हैं कि

समाज में असमानता और भेदभाव किस प्रकार व्यक्ति की पहचान और अधिकारों को प्रभावित करते हैं।

जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता को कई समकालीन नाटकों में प्रमुखता से उठाया गया है। दलित और हाशिए पर स्थित समुदायों के अनुभवों को मंच पर लाकर नाटककार सामाजिक न्याय की मांग को सशक्त करते हैं। इसी प्रकार स्त्री विमर्श भी समकालीन रंगमंच का एक महत्वपूर्ण पक्ष बन गया है, जहाँ महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता और समानता के प्रश्नों को राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है। लिंग पहचान और लैंगिक विविधता के मुद्दे भी अब नाटकों का हिस्सा बनने लगे हैं, जो समाज में व्यापक परिवर्तन और स्वीकृति की दिशा को दर्शाते हैं। धार्मिक पहचान और साम्प्रदायिकता के प्रश्नों को भी नाटककारों ने गंभीरता से उठाया है, जिससे समाज में सहिष्णुता और सद्भाव की आवश्यकता पर बल दिया जाता है।

समकालीन नाटककार यह स्पष्ट करते हैं कि राजनीतिक विचारधारा केवल सत्ता और शासन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के हर वर्ग की पहचान, अधिकार और अस्तित्व से जुड़ी हुई है। इस प्रकार रंगमंच एक ऐसा मंच बन जाता है, जहाँ विभिन्न पहचान समूह अपनी आवाज उठा सकते हैं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं (भगवत आदि, 2016)। यह लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

### मीडिया, वैश्वीकरण और रंगमंच

वैश्वीकरण और मीडिया के प्रभाव ने समकालीन हिन्दी रंगमंच को नई दिशा और आयाम प्रदान किए हैं। आज का रंगमंच पारंपरिक सीमाओं को पार करते हुए डिजिटल और वैश्विक मंचों तक पहुँच चुका है। अब नाटक केवल रंगमंच तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों के जरिए भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं। मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने नाटकों के विषय और प्रस्तुति शैली दोनों को प्रभावित किया है। नाटककार अब मीडिया की भूमिका, सूचना के प्रवाह, और जनमत निर्माण की प्रक्रिया को अपने नाटकों में शामिल कर रहे हैं (दिमित्रोवा आदि, 2008)। वे यह दिखाते हैं कि किस प्रकार मीडिया कभी-कभी सत्ता के साथ मिलकर सच्चाई को विकृत करता है, जबकि कई बार यह जनआवाज को भी सशक्त बनाता है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक बदलाव और पहचान संकट जैसे नए मुद्दे भी सामने आए हैं। समकालीन नाटक इन विषयों को उठाते हुए यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार वैश्विक प्रभाव स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को प्रभावित कर रहे हैं। इस संदर्भ में रंगमंच एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो स्थानीय पहचान को संरक्षित करने और उसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का कार्य करता है। इसके साथ ही, प्रयोगधर्मी रंगमंच (Experimental Theatre) का विकास भी समकालीन समय की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। नए-नए प्रयोगों, तकनीकों और शैलियों के माध्यम से नाटककार दर्शकों के साथ एक नया संबंध स्थापित कर रहे हैं। यह रंगमंच अधिक संवादात्मक, सहभागी और बहुआयामी बन गया है। अंततः यह कहा जा सकता है कि समकालीन हिन्दी रंगमंच राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकारों के बदलते स्वरूप का सशक्त दर्पण है। यह समय के साथ विकसित होते हुए नए-नए मुद्दों को अपने भीतर समाहित

करता है और समाज को एक जागरूक, विचारशील और सक्रिय दिशा प्रदान करता है।

### हिन्दी रंगमंच में जनसरोकारों की अभिव्यक्ति

हिन्दी रंगमंच सदैव समाज की धड़कनों से जुड़ा रहा है और उसने समय-समय पर जनजीवन से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों को अपनी अभिव्यक्ति का केंद्र बनाया है (राजगोपाल आदि, 2001)। जनसरोकारों की अभिव्यक्ति के माध्यम से रंगमंच न केवल सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करता है, बल्कि दर्शकों को संवेदनशील और जागरूक बनाने का कार्य भी करता है। आधुनिक और समकालीन हिन्दी रंगमंच में यह प्रवृत्ति और अधिक सशक्त रूप में दिखाई देती है, जहाँ नाटककार समाज के विविध वर्गों की समस्याओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को मंच पर लाते हैं।

हिन्दी रंगमंच में जनसरोकारों की अभिव्यक्ति मुख्यतः सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता, राजनीतिक शोषण, जातिगत भेदभाव, स्त्री-विमर्श तथा हाशिये पर स्थित वर्गों के जीवन-संघर्षों के माध्यम से सामने आती है (गजरावाला, 2012, पृ. 335)। नाटककारों ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के विभिन्न वर्ग किस प्रकार अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं और कैसे व्यवस्था की विसंगतियाँ उनके जीवन को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार रंगमंच केवल मनोरंजन का माध्यम न रहकर सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त उपकरण बन जाता है।

लोकनाट्य परंपरा और आधुनिक रंगमंच के समन्वय ने भी जनसरोकारों की अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावशाली बनाया है। हबीब तनवीर जैसे नाटककारों ने लोकभाषा, लोकसंस्कृति और जनजीवन को अपने नाटकों में शामिल करके आम जनता के अनुभवों को सीधे मंच पर प्रस्तुत किया (धारवाडकर, 2009, पृ. 142)। इससे रंगमंच और दर्शकों के बीच एक आत्मीय संबंध स्थापित होता है, जो सामाजिक चेतना के प्रसार में सहायक होता है।

इसके अतिरिक्त, हिन्दी रंगमंच में व्यंग्य, प्रतीक और यथार्थवादी शैली का प्रयोग जनसरोकारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नाटककार इन माध्यमों से समाज की समस्याओं को उजागर करते हुए दर्शकों को सोचने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार हिन्दी रंगमंच जनसामान्य की आवाज बनकर न केवल उनके जीवन की वास्तविकताओं को सामने लाता है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

### सामाजिक असमानता और शोषण

हिन्दी रंगमंच में सामाजिक असमानता, गरीबी और शोषण जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया है, जो भारतीय समाज की जटिल संरचना का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। नाटककारों ने इन विषयों को यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया है, जिससे समाज के उस वर्ग की पीड़ा सामने आती है, जो अक्सर मुख्यधारा के विमर्श से बाहर रह जाता है। सामाजिक असमानता केवल आर्थिक विषमता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जाति, वर्ग, शिक्षा और अवसरों की असमानता से भी जुड़ी हुई है (दिमित्रोवा आदि, 2014)। हिन्दी नाटकों में इन सभी पहलुओं को गहराई से चित्रित किया गया है। किसान, मजदूर, दलित और निम्न वर्ग के लोगों की समस्याओं को मंच पर लाकर नाटककारों

ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज में व्याप्त असंतुलन किस प्रकार मानव जीवन को प्रभावित करता है।

शोषण की प्रक्रिया को भी हिन्दी रंगमंच ने विभिन्न रूपों में उजागर किया है। चाहे वह आर्थिक शोषण हो, सामाजिक अन्याय हो या सांस्कृतिक दमन, नाटककार इन सभी पहलुओं को अपने कथानक का हिस्सा बनाते हैं। इस प्रकार रंगमंच एक ऐसा माध्यम बन जाता है, जो न केवल समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि उनके प्रति समाज में संवेदना और जागरूकता भी उत्पन्न करता है। इन नाटकों की विशेषता यह है कि वे दर्शकों को केवल दर्शक बनाकर नहीं रखते, बल्कि उन्हें सोचने और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार हिन्दी रंगमंच सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक सक्रिय भूमिका निभाता है।

### स्त्री विमर्श और राजनीतिक दृष्टिकोण

समकालीन हिन्दी रंगमंच में स्त्री विमर्श एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विषय के रूप में उभरा है। नाटककारों ने स्त्री के अधिकार, स्वतंत्रता और समानता के प्रश्नों को राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हुए यह दिखाने का प्रयास किया है कि स्त्री की स्थिति केवल सामाजिक नहीं, बल्कि गहरे राजनीतिक संदर्भों से भी जुड़ी हुई है (महियारिया आदि, 2020)। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को लंबे समय तक एक सीमित और नियंत्रित भूमिका में रखा गया है। हिन्दी नाटकों में इस व्यवस्था की आलोचना करते हुए यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार स्त्री को शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने के अधिकार से वंचित किया गया है। समकालीन नाटककार इस स्थिति को चुनौती देते हुए स्त्री की स्वतंत्र पहचान और अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास करते हैं। स्त्री पात्रों के माध्यम से नाटककार यह दिखाते हैं कि वे केवल परिवार या समाज की परिधि में सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अपने अधिकारों और स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त इकाइयाँ हैं। यह संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक भी है, क्योंकि यह समानता और न्याय की मांग से जुड़ा हुआ है।

इसके अतिरिक्त, स्त्री विमर्श में लैंगिक हिंसा, दहेज प्रथा, घरेलू उत्पीड़न और कार्यस्थल पर भेदभाव जैसे मुद्दों को भी उठाया गया है। इन विषयों को मंच पर प्रस्तुत करते हुए नाटककार समाज को यह संदेश देते हैं कि स्त्री के अधिकारों की रक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना एक लोकतांत्रिक समाज की अनिवार्य शर्त है। इस प्रकार हिन्दी रंगमंच स्त्री विमर्श को केवल भावनात्मक या व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि एक व्यापक राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करता है।

### पर्यावरण और विकास का प्रश्न

समकालीन समय में पर्यावरण और विकास के प्रश्न वैश्विक और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दे बन चुके हैं, और हिन्दी रंगमंच ने भी इन विषयों को अपनी अभिव्यक्ति का हिस्सा बनाया है। यह दर्शाता है कि जनसरोकार स्थिर नहीं होते, बल्कि समय के साथ बदलते रहते हैं और रंगमंच भी इन परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित करता है। नाटककारों ने औद्योगीकरण, शहरीकरण और अनियंत्रित विकास के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय संकटों को अपने नाटकों में चित्रित किया है (प्रसाद आदि, 1994)। जल, जंगल और

जमीन से जुड़े मुद्दे, विस्थापन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसे विषयों को मंच पर लाकर यह दिखाया गया है कि विकास की प्रक्रिया किस प्रकार प्रकृति और मानव जीवन दोनों को प्रभावित करती है।

पर्यावरणीय समस्याओं को केवल वैज्ञानिक या तकनीकी दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में भी देखा गया है। यह स्पष्ट किया गया है कि विकास की नीतियाँ अक्सर सत्ता और पूंजी के हितों के अनुसार निर्धारित होती हैं, जिससे आम जनता और विशेष रूप से आदिवासी तथा ग्रामीण समुदाय प्रभावित होते हैं। हिन्दी रंगमंच इन मुद्दों को उठाकर यह प्रश्न खड़ा करता है कि क्या विकास केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित होना चाहिए, या उसमें पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक न्याय को भी शामिल किया जाना चाहिए। इस प्रकार नाटककार दर्शकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि सतत विकास (sustainable development) ही भविष्य के लिए आवश्यक है। अंततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी रंगमंच में जनसरोकारों की अभिव्यक्ति बहुआयामी और व्यापक है। यह समाज के विभिन्न पहलुओं को समेटते हुए एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जहाँ समस्याओं को केवल प्रस्तुत नहीं किया जाता, बल्कि उनके समाधान की दिशा में भी विचार किया जाता है (भरूचा आदि, 2003)। इस प्रकार रंगमंच समाज के परिवर्तन और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

### रंगमंच की तकनीक और राजनीतिक प्रभाव

हिन्दी रंगमंच केवल विषयवस्तु के स्तर पर ही नहीं, बल्कि अपनी तकनीकों और अभिव्यक्ति की शैलियों के माध्यम से भी राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। रंगमंच की तकनीकें-जैसे प्रतीकवाद, व्यंग्य, लोकधर्मी शैली, मंच-संरचना, भाषा और अभिनय-नाटक के संदेश को गहराई और व्यापकता प्रदान करती हैं। ये तकनीकें नाटक को केवल एक कलात्मक प्रस्तुति न बनाकर उसे एक सशक्त वैचारिक माध्यम में रूपांतरित करती हैं, जिसके माध्यम से समाज और सत्ता के बीच संवाद स्थापित होता है।

### प्रतीकवाद और व्यंग्य

हिन्दी नाटकों में प्रतीकवाद और व्यंग्य का उपयोग राजनीतिक विचारधारा को प्रभावी, गूढ़ और बहुआयामी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए व्यापक रूप से किया गया है। प्रतीकवाद के माध्यम से नाटककार जटिल राजनीतिक और सामाजिक सच्चाइयों को सीधे न कहकर सांकेतिक रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे नाटक की अर्थवत्ता कई स्तरों पर खुलती है (Bhatia *et al.*, 2010)। यह तकनीक विशेष रूप से उन परिस्थितियों में उपयोगी होती है, जहाँ प्रत्यक्ष आलोचना संभव नहीं होती या जहाँ विचारों को अधिक सूक्ष्मता से व्यक्त करना आवश्यक होता है। प्रतीकों के माध्यम से सत्ता, शोषण, अन्याय और सामाजिक विडंबनाओं को एक रूपकात्मक ढाँचे में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी पात्र, वस्तु या घटना को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वह एक व्यापक राजनीतिक या सामाजिक यथार्थ का प्रतिनिधित्व करने लगे। इस प्रकार प्रतीक नाटक को केवल एक कथा न बनाकर उसे एक गहरे वैचारिक विमर्श में परिवर्तित कर देते हैं।

व्यंग्य हिन्दी रंगमंच की एक अत्यंत प्रभावशाली तकनीक है, जिसके माध्यम से नाटककार सत्ता, प्रशासन और सामाजिक संरचनाओं की विसंगतियों पर तीखा प्रहार करते हैं। व्यंग्य की विशेषता यह है कि वह गंभीर विषयों को भी एक सरल और रोचक शैली में प्रस्तुत करता है, जिससे दर्शक न केवल मनोरंजन प्राप्त करते हैं, बल्कि वे उस विडंबना को भी समझ पाते हैं, जो समाज में व्याप्त है। व्यंग्य के माध्यम से नाटककार भ्रष्टाचार, पाखंड, राजनीतिक अवसरवाद और सामाजिक अन्याय को उजागर करते हैं। यह तकनीक दर्शकों को हँसाते हुए सोचने पर मजबूर करती है, जिससे नाटक का प्रभाव अधिक गहरा और स्थायी हो जाता है (भाटिया आदि, 2010)। इस प्रकार प्रतीकवाद और व्यंग्य मिलकर हिन्दी रंगमंच को एक सशक्त राजनीतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं।

### लोकधर्मी शैली और जनसंवाद

लोकधर्मी शैली हिन्दी रंगमंच की एक ऐसी महत्वपूर्ण तकनीक है, जो इसे सीधे जनता से जोड़ती है और उसे अधिक सुलभ, जीवंत तथा प्रभावशाली बनाती है। इस शैली में लोकभाषा, लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक कथाएँ और स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों का उपयोग किया जाता है, जिससे नाटक आम जनता के जीवन के अधिक निकट आ जाता है।

लोकधर्मी रंगमंच का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह दर्शकों और कलाकारों के बीच की दूरी को कम करता है। इसमें संवाद अधिक प्रत्यक्ष और सहभागी होता है, जिससे दर्शक केवल निष्क्रिय दर्शक नहीं रहते, बल्कि वे प्रस्तुति का एक हिस्सा बन जाते हैं (डवायर आदि, 2014)। इस प्रकार रंगमंच एक सामूहिक अनुभव बन जाता है, जहाँ विचारों का आदान-प्रदान सहज रूप से होता है। इस शैली के माध्यम से नाटककार राजनीतिक विचारधारा और जनसरोकारों को सरल और प्रभावी भाषा में प्रस्तुत करते हैं। जटिल राजनीतिक मुद्दों को भी लोकभाषा और लोकशैली के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वे आम जनता के लिए सहज रूप से समझ में आ सकें। यह विशेषता हिन्दी रंगमंच को एक लोकतांत्रिक और जनोन्मुख स्वरूप प्रदान करती है।

लोकधर्मी शैली में अक्सर स्थानीय समस्याओं और अनुभवों को केंद्र में रखा जाता है, जिससे नाटक अधिक प्रामाणिक और प्रभावशाली बनता है (नंदी आदि, 1998)। यह शैली यह भी दर्शाती है कि राजनीति केवल उच्च स्तर की सत्ता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आम जनता के दैनिक जीवन से भी गहराई से जुड़ी हुई है। इसके अतिरिक्त, लोकधर्मी रंगमंच सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बनता है। यह न केवल समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक करता है। इस प्रकार यह शैली हिन्दी रंगमंच को जनसरोकारों के साथ गहराई से जोड़ती है और उसे एक प्रभावी सामाजिक-राजनीतिक उपकरण के रूप में स्थापित करती है।

### निष्कर्ष

आधुनिक हिन्दी नाटकों में राजनीतिक चेतना का स्वरूप अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और प्रभावशाली रूप में विकसित हुआ है। यह केवल सत्ता, शासन या राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज के समग्र जीवन, उसकी समस्याओं, संघर्षों और

परिवर्तन की आकांक्षाओं को भी अभिव्यक्त करता है। आधुनिक नाटककारों ने अपने नाटकों के माध्यम से राजनीतिक यथार्थ को उजागर करते हुए यह दिखाया है कि किस प्रकार सत्ता का दुरुपयोग, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता और लोकतांत्रिक व्यवस्था की विसंगतियाँ आम जनजीवन को प्रभावित करती हैं।

स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी नाटकों में जहाँ राजनीतिक चेतना मुख्यतः राष्ट्रवाद, औपनिवेशिक विरोध और सामाजिक जागरण के रूप में दिखाई देती है, वहीं स्वतंत्रता के बाद यह चेतना अधिक यथार्थवादी, आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक रूप धारण कर लेती है। नाटककारों ने लोकतंत्र की कमजोरियों, सत्ता और जनता के बीच बढ़ती दूरी तथा नैतिक मूल्यों के हास को अपने कथानकों और पात्रों के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

इसके साथ ही आधुनिक हिन्दी नाटकों में जनसंघर्ष और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति भी राजनीतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरती है। आम आदमी की पीड़ा, उसके अधिकारों के लिए संघर्ष और अन्याय के विरुद्ध उसकी आवाज नाटकों में सशक्त रूप से अभिव्यक्त होती है। प्रतीक, रूपक, व्यंग्य और संवादात्मक भाषा के माध्यम से नाटककारों ने जटिल राजनीतिक विषयों को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे दर्शकों में जागरूकता और चिंतन की प्रवृत्ति विकसित होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी नाटक केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का एक सशक्त उपकरण है। यह समाज को जागरूक करता है, उसे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील बनाता है तथा एक न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की दिशा में प्रेरित करता है।

### सन्दर्भ सूची

1. राय डी. विवादित प्रतिनिधित्व: दलित, लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा और सार्वजनिक क्षेत्र. ब्लूमसबरी पब्लिशिंग; 2022.
2. चक्रवर्ती एस. हिन्दी नाटकों में सांस्कृतिक पहचान: काव्यशास्त्र, राजनीति और भारत में रंगमंच (पुस्तक समीक्षा). Journal of Dramatic Theory and Criticism. 2025;39(2):131-133.
3. कुमार वी, चतुर्वेदी आर, मेहरोत्रा एस. हिन्दी फिल्मों में राजनीति और मनोरंजन के बीच गठबंधन. Journal of Education and Social Policy. 2014;1(1):29-40.
4. दलमिया वी. काव्यशास्त्र, नाटक और प्रदर्शन: आधुनिक भारतीय रंगमंच की राजनीति. Oxford University Press; 2008.
5. ओर्सिनी एफ. हिन्दी सार्वजनिक क्षेत्र 1920-1940. Oxford University Press; 2009.
6. ओर्सिनी एफ. हिन्दी सार्वजनिक क्षेत्र 1920-1940. University of London; 1996.
7. बौस एन. हिन्दू दक्षिणपंथ और सेंसरशिप की राजनीति. Velvet Light Trap. 2009;63(1):22-33.
8. भाटिया एन. प्राधिकरण के कार्य/प्रतिरोध के कार्य. University of Michigan Press; 2010.
9. दिमित्रोवा डी. हिन्दी नाटकों में सांस्कृतिक पहचान. Oxford University Press; 2023.

10. कांडी एम. हिन्दी सिनेमा, सार्वजनिक क्षेत्र और दलितों का संगम. *Politics and Policy*. 2024;52(1).
11. वाल्ट्ज़ एमएल. Indian People's Theatre Association: इसका विकास और प्रभाव. *Journal of South Asian Literature*. 1977;13(1/4):31–37.
12. चटर्जी पी. रंगमंच और लोकतंत्र के सार्वजनिक क्षेत्र. *Theatre Research International*. 2016;41(3):202–217.
13. बिस्वास टी, बनर्जी ए. भारतीय सिनेमा और प्रतिरोधी रंगमंच में वर्ग-जाति राजनीति. *Wasafiri*. 2023;38(3):76–85.
14. भगवत एच. भारत में राजनीतिक रंगमंच. *Lulu.com*; 2016.
15. दिमित्रोवा डी. लिंग, धर्म और आधुनिक हिन्दी नाटक. *McGill-Queen University Press*; 2008.
16. राजगोपाल ए. टेलीविजन के बाद की राजनीति. *Cambridge University Press*; 2001.
17. दिमित्रोवा डी. "अन्यत्व" की राजनीति. In: *The Other in South Asian Religion, Literature and Film*. Routledge; 2014. p. 84–99.
18. दिमित्रोवा डी. पाश्चात्य परंपरा और प्राकृतिकतावादी हिन्दी रंगमंच. *Peter Lang*; 2004.
19. महियारिया ए. राजनीतिक रंगमंच में संगठन की भूमिका (PhD thesis). *University of Exeter*; 2020.
20. प्रसाद एमएम. राज्य और संस्कृति: निष्क्रिय क्रांति में हिन्दी सिनेमा. *University of Pittsburgh Press*; 1994.
21. ग्रोवर एस. हिन्दी सिनेमा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (PhD thesis). *IGNOU*; n.d.
22. भरूचा आर. रंगमंच और विश्व. *Routledge*; 2003.
23. भाटिया एन. औपनिवेशिक भारत में सेंसरशिप. In: *Religion in Literature and Film in South Asia*. Palgrave Macmillan; 2010. p. 191–211.
24. डुवायर आर. बॉलीवुड का भारत. *Reaction Books*; 2014.
25. नंदी ए. प्रस्तावना. In: *The Secret Politics of Our Desires*. Oxford University Press; 1998. p. 1–18.
26. बैनर्जी एच. भाषा और मुक्ति. *Ariel*. 1984;15(4).
27. अवस्थी एस. हिन्दी रंगमंच का विकास और परंपरा. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी; 2011. p. 45–68.
28. कपूर आर. भारतीय रंगमंच और समाज. जयपुर: रावत प्रकाशन; 2016. p. 102–125.
29. श्रीवास्तव वी. आधुनिक हिन्दी नाटक में सामाजिक यथार्थ. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2018. p. 78–96.
30. पांडेय आरके. हिन्दी रंगमंच और राजनीतिक चेतना. नई दिल्ली: राजकमल; 2020. p. 134–158.
31. चौहान डी. भारतीय नाट्य परंपरा और आधुनिक प्रयोग. भोपाल: मप्र हिन्दी ग्रंथ अकादमी; 2017. p. 55–80.
32. अग्रवाल एस. समकालीन हिन्दी नाटक. नई दिल्ली: वाणी; 2019. p. 90–112.
33. मिश्रा वी. रंगमंच और जनसरोकार. इलाहाबाद: लोकभारती; 2015. p. 120–145.
34. सिंह आर. हिन्दी नाटक में लोकतांत्रिक चेतना. पटना: ज्ञानदीप; 2021. p. 66–89.

35. वर्मा एस. आधुनिक भारतीय रंगमंच और राजनीति. दिल्ली: Oxford University Press; 2014. p. 150–172.

Creative Commons (CC) License
<p>This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.</p>